वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 223

श्री वीरगुणसंपद् विधान

(लघु महावीर विधान)

-रचयित्री-

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के
आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष (अप्रैल 2006-अप्रैल 2007) के अन्तर्गत
उनकी जन्मदात्री माँ पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की
36वीं दीक्षा तिथि के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

द्वितीय संस्करण	मगशिर कृष्णा 3	मूल्य
1100 प्रतियाँ	वीर.नि.सं. 2533	16/-
	8 नवम्बर 2006	

वीरगुणसंपद् विधान का मंडल

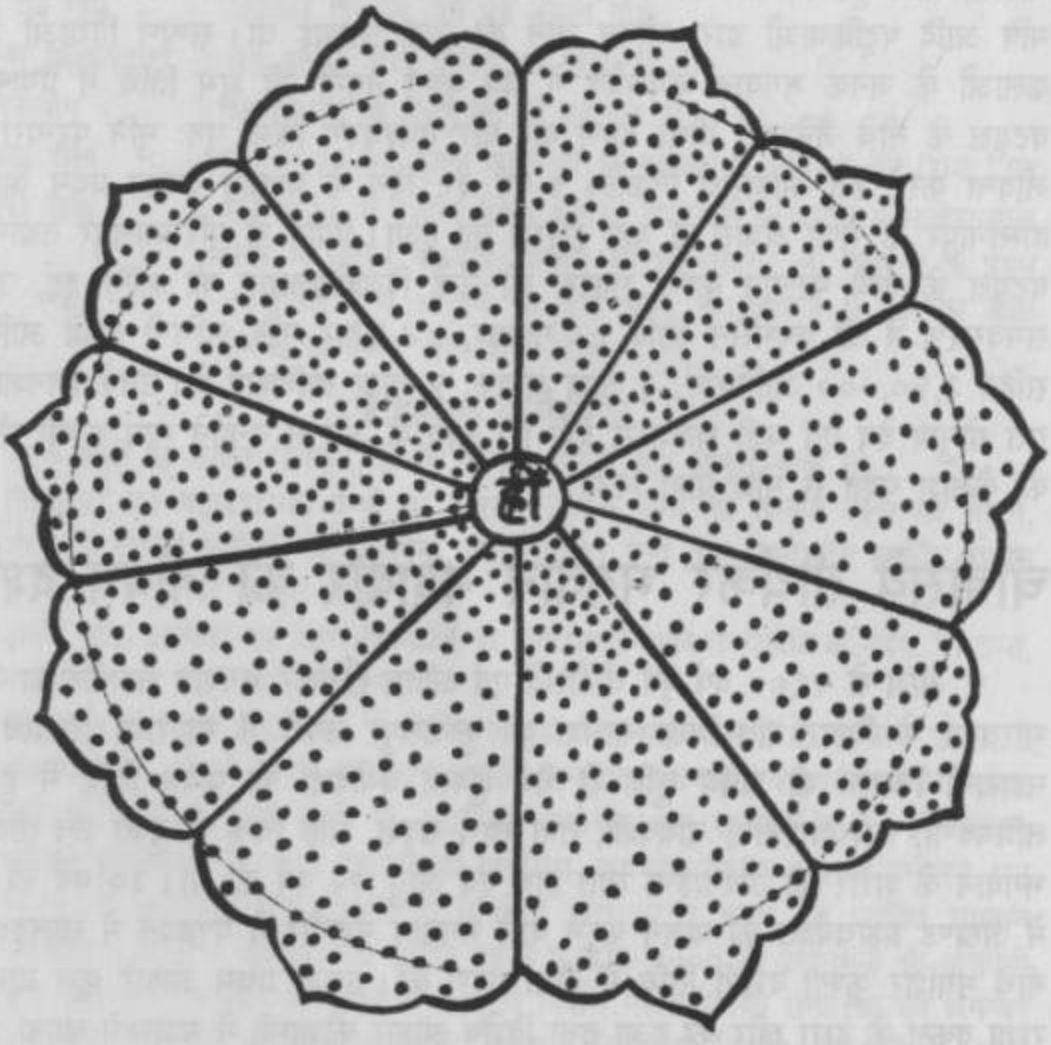

- प्रथम कोष्ठक से नवमें कोष्ठक तक १००-१०० अर्घ्य
- अन्तिम दशवें कोष्ठक में १०९ अर्घ्य

वीर गुणसंपद् विधान

(गणिनी ज्ञानमती विरचित)

महावीर वंदना

शंभुछंद

महावीर! वीर! सन्मति! भगवन्! अतिवीर! सदा मंगल करिये।
हे वर्धमान! भववारिधि से, अब मुझको पार त्वरित करिये।।
वह कुंडलपुरि जगपूज्य हुई, सिद्धार्थ दुलारे जन्मे थे ।
त्रिशला माता की गोदी में, त्रिभुवन के गुरुवर खेले थे।।१।।
आषाढ़ सुदी छठ पूज्य हुई, जब गर्भ में प्रभु अवतार लिया।
प्रियकारिणि माँ की सेवा का, सुर ललनाओं ने भार लिया ।।
शुभ चैत्र सुदी तेरस का दिन, है धन्य धन्य वह सुखद घड़ी ।
जब वर्द्धमान ने जन्म लिया, नभ से सुर पंक्ति उमड़ पड़ी ।।२।।
प्रभु शैशव में अजगर फण पर, चढ़कर संगम सुर जीता था।
नहिं ब्याह किया, नहिं राज्य किया, जनता का मन भी जीता था।।
मगसिर वदि दशमी धन्य हुई, जब केंशलोच कीना तुमने।
नृप कूल ने प्रथम आहार दिया, पंचाश्चर्य किया देवगण ने ।।३।।

कौशाम्बी में चंदनासती, शिर मुंडित जकड़ी बेड़ी में ।
प्रभु दर्शन से बेड़ियां झड़ी, सुंदर तन हुआ एक क्षण में ।।
कोदों भोजन हो गया खीर, प्रभु को आहार दे धन्य हुई ।
यह महिमा तीर्थंकर प्रभु की, पंचाश्चर्यों की वृष्टि हुई ।।४।।
अतिमुक्तक वन में ध्यान लीन, थे भव ने आ उपसर्ग किया ।
तब अचलित प्रभु को देख स्वयं, भार्या सह पूजा भक्ति किया ।
वैशाख सुदी दशमी तिथि में, केवल रविकिरणें प्रगट हुईं।
शुभ समवसरण था रचा हुआ, दिव्यध्वनि फिर भी खिरी नहीं ।।५।।
श्रावण श्यामा एकम उत्तम, जब गौतम गणधर आये हैं।
विपुलाचल पर ध्वनि प्रगट हुई, मुनिगण सुरनर हर्षायें हैं।।
हे वीरप्रभो! तव शासन में, मुझको रत्नत्रय निधी मिली ।
मैं भक्ति सहित प्रणमूं तुमको, मेरी मन कलियां आज खिलीं।।६।।
तनु सात हाथ कांचन कांती, आयु बाहत्तर वर्ष कही।
है चिन्ह मृगेन्द्र प्रभो तेरा, जो ध्यावें पावें मोक्ष मही।।
कार्तिक वदि चौदश रात्रि अंत, आमावस का प्रत्यूष कहा।
सब कर्मनाश प्रभु मोक्ष गये, स्वात्मोत्थ सहज आनंद लहा।।७।।
पावापुर के उपवन में जो, सरवर है कमल खिले उसमें।
प्रभु के निर्वाण कल्याणक से, अब तक भी कमल खिले सच में।।
देवों ने आकर पूजा की, महावीर प्रभू त्रिभुवनपति की।
अंधियारी में दीपक ज्वालें, तब से ही दीपावली हुई ।।८।।
हे वीर प्रभो! मंगलमय तुम, लोकोत्तम शरणभूत तुम ही।
भव भव के संचित पाप पुंज, इक क्षण में नष्ट करो सब ही।।
मैं बारंबार नमूं तुमको, भगवन्! मेरे भव त्रास हरो ।
सज्ज्ञानमती सिद्धी देकर, स्वामिन्! अब मुझे कृतार्थ करो ।।९।।

ॐ ह्रीं मंडलस्योपरि रजत-स्वर्णपुष्प-मल्लिकाकमलादिपुष्प-समन्वितपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(मंडल पर रजत पुष्प, स्वर्णपुष्प, बेला, मालती, कमलादि पुष्प सहित पुष्पांजली क्षेपण करें तथा अनेक प्रकार के बाजे बजावें।)

श्री महावीर पूजा

स्थापना - तर्ज - यह नंदन वन .....

श्री वीर प्रभू, महावीर प्रभू, हम पूजा करने आये हैं।
मिल जाय मुझे सम्यक्त्वनिधी, बस यही भावना लाये हैं।।
आह्वान संस्थापन करके सन्निधीकरण विधि करते हैं।
निज हृदयाम्बुज में धारण कर अज्ञानतिमिर को हरते हैं।।
गणधर मुनगण से नितवंदित की अर्चा करने आये हैं।
श्री वीर प्रभू, महावीर प्रभू, हम पूजा करने आये हैं।।१।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अथ अष्टक - तर्ज - मेरे देश की धरती .....

प्रभु वीर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये ।
प्रभु वीर की .....
भव भव में जी भर नीर पिया, नहिं अब तक प्यास बुझा पाये।
इसलिये आपकी पूजा को, कंचन झारी में जल लाये।।
प्रभु पद में धारा करते ही, समरस सुख अमृत पायें।
प्रभु वीर की ..... ।।१।।
ये क्रोध मान माया व लोभ, चारों कषाय दुःखदायी हैं।
इनने मेरी संयम निधि को, लूटा भव भ्रमण कराती हैं।
हम इनका नाश करें भगवन्, सम्यक्त्व रतन पा जायें।।
प्रभु वीर **की** ..... ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ..... ।।१।।

प्रभु वीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये।
प्रभु वीर की अर्चा.....
मानस शारीरिक आगंतुक, भव भव में बहु दुख पाये हैं।
इसलिये आपकी पूजा को, चंदन केशर घिस लाये हैं।।
प्रभु पद में चर्चन करते ही, तन मन शीतल हो जाये।
प्रभु वीर की ..... ।।१।।
ज्वर कैंसर कुष्ठ कामलादी, व्याधी तन को दुख देती हैं।
प्रभु भक्ती परम रसायन है, काया कंचन कर देती हैं।
गंधोदक तन में लगते ही, सब रोग शोक नश जायें।
प्रभु वीर की ..... ।।२।।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं ..... ।।२।।
प्रभु वीर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये।
प्रभु वीर की ....
इंद्रिय सुख पाने की इच्छा, से दुःख अनंत उठाये हैं।
इच्छित सुख नहीं मिल सका किंतु, भवदधि में गोते खाये हैं।
इसलिये धौत सित अक्षत ले ... हम पुंज चढ़ाने आये।
प्रभु वीर की अर्चा .....
यह आत्मा शुद्ध अखंडित है, निजज्ञान किरण से जगव्यापी।
जग में कर्मों से संबंधित, भवव्याधी रग रग में व्यापी।।
अक्षय पद पाने हेतु प्रभो.... तुम चरणों शीश नमायें।
प्रभु वीर ....
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं ..... ।।३।।
प्रभुवीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये।
प्रभु वीर .....
इस कामदेव ने तिंहु जग में, निजशर से सबको वश्य किया।
प्रभु के चरणाम्बुज में आकर, वह तो क्षणभर में वश्य हुआ।।
निष्काम तुम्हारे चरणों में, हम पुष्प चढ़ा सुख पायें।
प्रभु.... ।।१।।
समता पीयूष पिये मुनिगण, स्वात्मा का अनुभव करते हैं।
फिर शुक्लध्यान में तन्मय हो, कैवल्यरमा को वरते हैं।

निज साम्यसुधारस पीने को, प्रभु चरण कमल को ध्यायें।
प्रभु वीर की .... ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं ..... ।।४।।

प्रभु वीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये।
प्रभु वीर की ....

यह क्षुधा रोग दुख देता नित, हम कैसे छुटकारा पायें।
प्रभु परमानंदामृत पीते, इसलिये आप शरणें आयें।
नैवेद्य चढ़ाकर तुम सन्मुख, हम परम तृप्ति को पायें ।। प्रभु...।।१।।
जो आकिंचन भी तपोधनी, ज्ञानामृत भोजन करते हैं।
सर्दी में धैर्यमयी कंबल, ओढ़े गर्मी भी सहते हैं।।
ऐसे मुनि भी तुम वंदन कर, हर्षित मन ध्यान लगायें।। प्रभु...।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं .... ।।५।।

प्रभुवीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये।
प्रभु वीर की .....

मिथ्यात्व अंधेरे में हमने, नहिं किंचित निज को पहचाना।
प्रभु तुम हो केवलज्ञान सूर्य, इसलिये उचित समझा आना।
दीपक से तुम आरति करते, मन का अंधेर मिटायें।। प्रभु...।।१।।
परिवार महल धन संपत्ति को, मेरा मेरा कह दुख पाया ।
मैं नित्य अकेला ही निश्चित, अब तुम प्रसाद से मन आया।।
प्रभु वंदन अर्चन कर कर के, निज ज्ञान ज्योति चमकायें।। प्रभु..।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं .... ।।६।।

प्रभु वीर की अर्चा, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये ।। प्रभु...।।
शाश्वत जिनभवनों में असंख्य भी, धूप घड़ों में अग्नि जले।
नित सुरगण सुरभि धूप खेते, तब धूम दशों दिश में फैले।।
हम धूपायन में धूप खेय, निज के सब कर्म जलायें।। प्रभु....।।१।।
यद्यपि पूजन में आरंभी हिंसा किंचित् हो जाती है।
फिर भी समुद्र में विषकणवत् वह हानि नहीं कर पाती है।

इस कारण पूजा भक्तों के अतिशायी पुण्य बढ़ाये।। प्रभु...।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं ..... ।।७।।

प्रभुवीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये।

प्रभु वीर की .....

दाड़िम केला अंगूर सेव फल सरस मधुर ले आये हैं।
वर मोक्ष महा फल पाने को, तुम निकट चढ़ाने आये हैं।।
फल से पूजा करके भगवन्, रत्नत्रय निधि पा जायें ।। प्रभु...।।१।।
शत इंद्र सभी सुरतरु के फल, ला लाकर पूजा करते हैं।
जिनवर पूजा का ही महात्म्य, वे इच्छित फल को लभते हैं।।
निज परमानन्द सुफल पाने, हम शरण आपकी आये ।। प्रभु...।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं ..... ।।८।।

प्रभुवीर की अर्चा, सकल विश्व में शांतिसुधा बरसाये ।। प्रभु...।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, उसमें नवरत्न मिलाये हैं।
निजभाव अपूर्व अपूर्व मिले, यह आशा लेकर आये हैं।।
चरणों में अर्घ्य चढ़ा करके, नवगुण लब्धी पा जायें।। प्रभु...।।१।।
सज्जाति सद्गार्हस्थ्य प्रव्रज्या, इंद्र सौख्य साम्राज्य कहें।
आर्हन्त्य परमनिर्वाण सात, ये परमस्थान प्रधान रहें।।
प्रभु पूजा से इनकों पावें, हम यही भावना भायें।। प्रभु.....।।२।।

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं .... ।।९।।

स्रग्विणी छंद -

नाथ पदकंज में शांतिधारा करें। विश्व में शांति होवे यही कामना।।
आधि सब दूर हों चित्त में शांति हो। भक्ति से प्राप्त हो शांति आत्यंतिकी।।१०।।

शांतये शांतिधारा ।

नाथ के गुणसुमन आज चुन कर लिये। विश्व में गुण सुरभि फैलती है प्रभो।
पुष्प अंजलि समर्पण करूं प्रेम से। पुण्यसंपत्ति पाऊं सुयश वृद्धि हो।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ १०० मंत्रों के अर्घ्य

दोहा- परमचिंदबर चित्पुरुष, चिदानंद भगवान्।
पुष्पांजलिं अर्पण करत, मिले सौख्य अमलान।।१।।
अथ मंडलस्योपरि प्रथम कोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(मंडल पर प्रथम कोष्ठक के एक-एक अर्घ्य चढ़ाना है।)

ॐ ह्रीं जिनानां स्वामिस्वरूपजिनेंद्रगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।।१।।
ॐ ह्रीं जिनधौरेयगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ...।।२।।
ॐ ह्रीं जिनस्वामिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३।।
ॐ ह्रीं जिनाग्रणीगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४।।
ॐ ह्रीं जिनेशगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५।।
ॐ ह्रीं जिनशार्दूलगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६।।
ॐ ह्रीं जिनाधीशगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७।।
ॐ ह्रीं जिनोत्तमगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८।।
ॐ ह्रीं जिनराजगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९।।
ॐ ह्रीं जिनज्येष्ठगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१०।।
ॐ ह्रीं जिनेशिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।११।।
ॐ ह्रीं जिनपालकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१२।।
ॐ ह्रीं जिननाथगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१३।।
ॐ ह्रीं जिनश्रेष्ठगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१४।।
ॐ ह्रीं जिनमल्लगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१५।।
ॐ ह्रीं जिनोन्नतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१६।।
ॐ ह्रीं जिननेतृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१७।।
ॐ ह्रीं जिनस्रष्टृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१८।।
ॐ ह्रीं जिनेड्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१९।।
ॐ ह्रीं जिनपतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय .... ।।२०।।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुविजयिजिननाम्नप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२१।।
ॐ ह्रीं जिनदेवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२२।।
ॐ ह्रीं जिनादित्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२३।।
ॐ ह्रीं जिनेशितृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२४।।
ॐ ह्रीं जिनेश्वरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२५।।
ॐ ह्रीं जिनवर्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२६।।
ॐ ह्रीं जिनाराध्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२७।।
ॐ ह्रीं जिनार्च्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२८।।
ॐ ह्रीं जिनपुंगवगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२९।।
ॐ ह्रीं जिनाधिपगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३०।।
ॐ ह्रीं जिनध्येयगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३१।।
ॐ ह्रीं जिनमुख्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३२।।
ॐ ह्रीं जिनेडितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३३।।
ॐ ह्रीं जिनसिंहगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३४।।
ॐ ह्रीं जिनप्रेक्षगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३५।।
ॐ ह्रीं जिनवृद्धगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३६।।
ॐ ह्रीं जिनोत्तरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३७।।
ॐ ह्रीं जिनमान्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३८।।
ॐ ह्रीं जिनस्तुत्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३९।।
ॐ ह्रीं जिनप्रभुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४०।।
ॐ ह्रीं जिनोद्वहगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४१।।
ॐ ह्रीं जिनपूज्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४२।।
ॐ ह्रीं जिनाकांक्षिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४३।।
ॐ ह्रीं जिनेन्दुगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४४।।
ॐ ह्रीं जिनसत्तमगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४५।।
ॐ ह्रीं जिनाकारगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४६।।
ॐ ह्रीं जिनोत्तुंगगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४७।।

ॐ ह्रीं जिनपगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४८।।
ॐ ह्रीं जिनकुंजरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४९।।
ॐ ह्रीं जिनभर्तृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५०।।
ॐ ह्रीं जिनाग्रस्थगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५१।।
ॐ ह्रीं जिनभूतृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५२।।
ॐ ह्रीं जिनचक्रभाग्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५३।।
ॐ ह्रीं जिनचक्रिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५४।।
ॐ ह्रीं जिनाद्याद्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५५।।
ॐ ह्रीं जिनसेव्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५६।।
ॐ ह्रीं जिनाधिपगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५७।।
ॐ ह्रीं जिनकान्तगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५८।।
ॐ ह्रीं जिनप्रीतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५९।।
ॐ ह्रीं जिनाधिराट्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६०।।
ॐ ह्रीं जिनप्रियगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६१।।
ॐ ह्रीं जिनधुर्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६२।।
ॐ ह्रीं जिनार्चाघ्रिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३।।
ॐ ह्रीं जिनाग्रिमगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४।।
ॐ ह्रीं जिनस्तुतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५।।
ॐ ह्रीं जिनहंसगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६६।।
ॐ ह्रीं जिनत्रातृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६७।।
ॐ ह्रीं जिनर्षभगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६८।।
ॐ ह्रीं जिनाग्रगगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६९।।
ॐ ह्रीं जिनधृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७०।।
ॐ ह्रीं जिनचक्रेशगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७१।।
ॐ ह्रीं जिनदातृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७२।।
ॐ ह्रीं जितात्मकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७३।।
ॐ ह्रीं जिनाधिकगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७४।।

ॐ ह्रीं जिनालक्षगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७५।।
ॐ ह्रीं जिनशांतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७६।।
ॐ ह्रीं जिनोत्कटगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७७।।
ॐ ह्रीं जिनाश्रितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७८।।
ॐ ह्रीं जिनाल्हादिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७९।।
ॐ ह्रीं जिनातर्क्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८०।।
ॐ ह्रीं जिनान्वितगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८१।।
ॐ ह्रीं शमदमशासनोपदेशकजैनगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८२।।
ॐ ह्रीं जैनवरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८३।।
ॐ ह्रीं जैनस्वामिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८४।।
ॐ ह्रीं जैनपितामहगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८५।।
ॐ ह्रीं जैनेड्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८६।।
ॐ ह्रीं जैनसंघार्च्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८७।।
ॐ ह्रीं जैनभृद्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८८।।
ॐ ह्रीं जैनपालकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८९।।
ॐ ह्रीं जैनकृद्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९०।।
ॐ ह्रीं जैनधौरेयगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९१।।
ॐ ह्रीं जैनेशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९२।।
ॐ ह्रीं जैनभूपतिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९३।।
ॐ ह्रीं जैनेड्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९४।।
ॐ ह्रीं जैनाग्रिमगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९५।।
ॐ ह्रीं जैनपितृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९६।।
ॐ ह्रीं जैनहितंकरगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९७।।
ॐ ह्रीं जैननेतृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९८।।
ॐ ह्रीं जैनाढ्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९९।।
ॐ ह्रीं जैनधृदगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१००।।

पूर्णार्घ्य-स्रग्विणीछंद -

कर्म के भेद ये जो अनंते कहे। नाश के ही जिनेंद्रादि पद पा लिया।
मैं अनंतों गुणों को स्वयं ही वरूं। शक्ति ऐसी मिले आपकी भक्ति से।।१।।
परम आनंद धर्मा गुणांभोधि हो। स्वात्म आनंद पाऊं प्रभो भक्ति से।।
कल्पतरु आपसे याचना मैं करूं। दीजिये तीन ही रत्न पूजूं तुम्हें।।२।।

ॐ ह्रीं जिनेंद्रादिजैनधृद्गुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं .... । शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः ।

दोहा- ज्ञाननेत्र से लोकते, लोक-अलोक समस्त।
महावीर जिनराज मम, शिवपथ करो प्रशस्त ।।१।।

अथ द्वितीयकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत् (१०० अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं जैनदेवराड्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१०१।।
ॐ ह्रीं जैनाधिपगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१०२।।
ॐ ह्रीं जैनात्मगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१०३।।
ॐ ह्रीं जैनेक्ष्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१०४।।
ॐ ह्रीं जैनचक्रभृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१०५।।
ॐ ह्रीं जिताक्षगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१०६।।
ॐ ह्रीं जितकंदर्पगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१०७।।
ॐ ह्रीं जितकामगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१०८।।
ॐ ह्रीं जिताशयगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१०९।।
ॐ ह्रीं जितैनसुगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।११०।।
ॐ ह्रीं जितकर्मारिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१११।।
ॐ ह्रीं जितेन्द्रियगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।११२।।
ॐ ह्रीं जिताखिलगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।११३।।
ॐ ह्रीं जितशत्रुगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।११४।।
ॐ ह्रीं आशासमूहविजयिजिताशौघगुणविशिष्टाय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।११५।।

ॐ ह्रीं जितजेयगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।११६।।
ॐ ह्रीं जितात्मभाग्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.... ।।११७।।
ॐ ह्रीं जितलोभगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।११८।।
ॐ ह्रीं जितक्रोधगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।११९।।
ॐ ह्रीं जितमानगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१२०।।
ॐ ह्रीं जितान्तकगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१२१।।
ॐ ह्रीं जितरागगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१२२।।
ॐ ह्रीं जितद्वेषगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१२३।।
ॐ ह्रीं जितमोहगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१२४।।
ॐ ह्रीं जिनेश्वरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१२५।।
ॐ ह्रीं जिताजय्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१२६।।
ॐ ह्रीं जिताशेषगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१२७।।
ॐ ह्रीं जितेशगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१२८।।
ॐ ह्रीं जितदुर्मतगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१२९।।
ॐ ह्रीं जितवादिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१३०।।
ॐ ह्रीं जितक्लेशगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१३१।।
ॐ ह्रीं जितमुंडगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१३२।।
ॐ ह्रीं जिताव्रतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१३३।।
ॐ ह्रीं जितदेवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१३४।।
ॐ ह्रीं जितशान्तिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१३५।।
ॐ ह्रीं जितखेदगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१३६।।
ॐ ह्रीं जितारतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१३७।।
ॐ ह्रीं यतीडितगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१३८।।
ॐ ह्रीं यतीशार्च्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१३९।।
ॐ ह्रीं यतीशगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१४०।।
ॐ ह्रीं यतिनायकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१४१।।
ॐ ह्रीं यतिमुखगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१४२।।

ॐ ह्रीं यतिप्रेक्ष्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१४३।।
ॐ ह्रीं यतिस्वामिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१४४।।
ॐ ह्रीं यतीश्वरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१४५।।
ॐ ह्रीं मोक्षप्राप्तिकारणप्रतिपादकाय यतिगुणविशिष्टाय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१४६।।
ॐ ह्रीं यतिवरगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१४७।।
ॐ ह्रीं यत्याराध्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१४८।।
ॐ ह्रीं यतिगुणस्तुतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।१४९।।
ॐ ह्रीं यतिश्रेष्ठगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१५०।।
ॐ ह्रीं यतिज्येष्ठगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१५१।।
ॐ ह्रीं यतिभर्तृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१५२।।
ॐ ह्रीं यतीहितगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१५३।।
ॐ ह्रीं यतिधुर्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१५४।।
ॐ ह्रीं यतिसृष्टृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१५५।।
ॐ ह्रीं यतिनाथगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१५६।।
ॐ ह्रीं यतिप्रभुगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१५७।।
ॐ ह्रीं यत्याकारगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१५८।।
ॐ ह्रीं यतित्रातृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१५९।।
ॐ ह्रीं यतिबंधुगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१६०।।
ॐ ह्रीं यतिप्रियगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१६१।।
ॐ ह्रीं योगीन्द्रगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१६२।।
ॐ ह्रीं योगिराड्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१६३।।
ॐ ह्रीं योगिपतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१६४।।
ॐ ह्रीं योगिविनायकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१६५।।
ॐ ह्रीं योगीश्वरगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१६६।।
ॐ ह्रीं योगीशगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१६७।।
ॐ ह्रीं योगिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१६८।।
ॐ ह्रीं योगपरायणगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१६९।।

ॐ ह्रीं योगिपूज्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१७०।।
ॐ ह्रीं योगांशगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१७१।।
ॐ ह्रीं योगवद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१७२।।
ॐ ह्रीं योगपारगगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१७३।।
ॐ ह्रीं योगधृद्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१७४।।
ॐ ह्रीं योगरूपात्मगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१७५।।
ॐ ह्रीं योगभाग्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१७६।।
ॐ ह्रीं योगभूषितगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१७७।।
ॐ ह्रीं योग्यन्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१७८।।
ॐ ह्रीं योगिकल्पांगगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१७९।।
ॐ ह्रीं योगिकृद्गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१८०।।
ॐ ह्रीं योगिमुख्यार्च्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१८१।।
ॐ ह्रीं योगिभूगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१८२।।
ॐ ह्रीं योगिभूपतिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१८३।।
ॐ ह्रीं सर्वज्ञगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१८४।।
ॐ ह्रीं सर्वलोकज्ञगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१८५।।
ॐ ह्रीं सर्वदृग्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१८६।।
ॐ ह्रीं सर्वतत्त्वविद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।१८७।।
ॐ ह्रीं सर्वक्लेशसहगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१८८।।
ॐ ह्रीं सार्वगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१८९।।
ॐ ह्रीं सर्वचक्षुर्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१९०।।
ॐ ह्रीं सर्वराड्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१९१।।
ॐ ह्रीं सर्वाग्रिमगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१९२।।
ॐ ह्रीं सर्वात्मगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१९३।।
ॐ ह्रीं सर्वेशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१९४।।
ॐ ह्रीं सर्वदर्शनगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१९५।।
ॐ ह्रीं सर्वेज्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१९६।।

ॐ ह्रीं सर्वधर्मांगगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१९७।।
ॐ ह्रीं सर्वजीवदयावहगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।१९८।।
ॐ ह्रीं सर्वज्येष्ठगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।१९९।।
ॐ ह्रीं सर्वाधिकगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२००।।

पूर्णार्घ्य - शंभुछंद -

निजआत्मा की उपलब्धि किया, संतत रत रहते उसमें ही।
मैं निज से निज में रम जाऊं, इसलिये नमूं तुमको नित ही।।
महावीर प्रभू की पूजा से, "सोऽहं" यह भाव प्रगट होता ।
फिर पुनर्भवों से छूटें जन, निज आत्मा का अनुभव होता।।१।।

ॐ ह्रीं जैनदेवराड्गुणादिसर्वाधिकगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं ....। शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा - गुण रत्नाकर तीर्थकर, तुम पद परम पुनीत।
कुसुमांजलि करके यहाँ, मैं अर्चूं धर प्रीत।।

अथ तृतीयकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत् (१०० अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं सर्वत्रिजगद्हितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।२०१।।
ॐ ह्रीं सर्वधर्ममयगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।२०२।।
ॐ ह्रीं सर्वस्वामिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२०३।।
ॐ ह्रीं सर्वगुणाश्रितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२०४।।
ॐ ह्रीं विश्वविद्गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२०५।।
ॐ ह्रीं विश्वनाथार्च्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।२०६।।
ॐ ह्रीं विश्वेड्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२०७।।
ॐ ह्रीं विश्वबांधवगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२०८।।
ॐ ह्रीं विश्वनाथगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२०९।।
ॐ ह्रीं विश्वार्हगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२१०।।
ॐ ह्रीं विश्वात्मगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२११।।

ॐ ह्रीं विश्वकारकगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२१२।।
ॐ ह्रीं विश्वेड्गुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२१३।।
ॐ ह्रीं विश्वपितृगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२१४।।
ॐ ह्रीं विश्वधरगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२१५।।
ॐ ह्रीं विश्वाभयंकरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।२१६।।
ॐ ह्रीं विश्वव्यापिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२१७।।
ॐ ह्रीं विश्वेशिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२१८।।
ॐ ह्रीं विश्वधृद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२१९।।
ॐ ह्रीं विश्वभूमिपगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२२०।।
ॐ ह्रीं विश्वधीगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२२१।।
ॐ ह्रीं विश्वकल्याणगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।२२२।।
ॐ ह्रीं विश्वकृद्गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२२३।।
ॐ ह्रीं विश्वपारगगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२२४।।
ॐ ह्रीं विश्ववृद्धगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२२५।।
ॐ ह्रीं विश्वांगिरक्षकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ..।।२२६।।
ॐ ह्रीं विश्वपोषकगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२२७।।
ॐ ह्रीं जगत्कर्तृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२२८।।
ॐ ह्रीं जगद्भर्तृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२२९।।
ॐ ह्रीं जगत्त्रातृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२३०।।
ॐ ह्रीं जगज्जयिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२३१।।
ॐ ह्रीं जगन्मान्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२३२।।
ॐ ह्रीं जगज्जयेष्ठगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।२३३।।
ॐ ह्रीं जगच्छ्रेष्ठगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२३४।।
ॐ ह्रीं जगत्पतिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२३५।।
ॐ ह्रीं जगद्धृतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२३६।।
ॐ ह्रीं जगन्नाथगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२३७।।
ॐ ह्रीं जगद्ध्येयगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२३८।।

ॐ ह्रीं जगत्स्तुतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२३९।।
ॐ ह्रीं जगत्पातृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२४०।।
ॐ ह्रीं जगद्धातृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२४१।।
ॐ ह्रीं जगत्सेव्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२४२।।
ॐ ह्रीं जगच्छ्रितगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२४३।।
ॐ ह्रीं जगत्स्वामिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२४४।।
ॐ ह्रीं जगत्पूज्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२४५।।
ॐ ह्रीं जगत्सार्थगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२४६।।
ॐ ह्रीं जगद्हितगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२४७।।
ॐ ह्रीं जगद्वेत्तृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२४८।।
ॐ ह्रीं जगच्चक्षुर्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२४९।।
ॐ ह्रीं जगद्दर्शिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२५०।।
ॐ ह्रीं जगत्पितृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२५१।।
ॐ ह्रीं जगत्कांतगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२५२।।
ॐ ह्रीं जगद्दांतगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२५३।।
ॐ ह्रीं जगद्ज्ञातृगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२५४।।
ॐ ह्रीं जगज्जितगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२५५।।
ॐ ह्रीं जगद्धीरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२५६।।
ॐ ह्रीं जगद्वीरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२५७।।
ॐ ह्रीं जगत्प्रान्तगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२५८।।
ॐ ह्रीं जगत्प्रियगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२५९।।
ॐ ह्रीं महाज्ञानिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२६०।।
ॐ ह्रीं महाध्यानिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२६१।।
ॐ ह्रीं महाकृतिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२६२।।
ॐ ह्रीं महाव्रतिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२६३।।
ॐ ह्रीं महाराजगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२६४।।
ॐ ह्रीं महार्थज्ञगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२६५।।

ॐ ह्रीं महातेजोगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२६६।।
ॐ ह्रीं महातपोगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२६७।।
ॐ ह्रीं महाजेतृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२६८।।
ॐ ह्रीं महाजय्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२६९।।
ॐ ह्रीं महाक्षान्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२७०।।
ॐ ह्रीं महादमगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२७१।।
ॐ ह्रीं महादान्तगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२७२।।
ॐ ह्रीं महाशांतगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२७३।।
ॐ ह्रीं महाकान्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२७४।।
ॐ ह्रीं महाबलिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२७५।।
ॐ ह्रीं महादेवगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२७६।।
ॐ ह्रीं महापूतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२७७।।
ॐ ह्रीं महायोगिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२७८।।
ॐ ह्रीं महाधनिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२७९।।
ॐ ह्रीं महाकामिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२८०।।
ॐ ह्रीं महाशूरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२८१।।
ॐ ह्रीं महाभटगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२८२।।
ॐ ह्रीं महायशोगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२८३।।
ॐ ह्रीं महानादगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२८४।।
ॐ ह्रीं महास्तुत्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२८५।।
ॐ ह्रीं महामहपतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२८६।।
ॐ ह्रीं सर्वोत्तममहागुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।२८७।।
ॐ ह्रीं महाधीरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२८८।।
ॐ ह्रीं महावीरगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२८९।।
ॐ ह्रीं महाबंधुगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२९०।।
ॐ ह्रीं महाश्रमगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२९१।।
ॐ ह्रीं महाधारगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२९२।।

ॐ ह्रीं महाकारगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२९३।।
ॐ ह्रीं महाशर्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२९४।।
ॐ ह्रीं महाश्रयगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२९५।।
ॐ ह्रीं महायोगिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२९६।।
ॐ ह्रीं महाभोगिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२९७।।
ॐ ह्रीं महाब्रह्मगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२९८।।
ॐ ह्रीं महीधरगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।२९९।।
ॐ ह्रीं महाधुर्यगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३००।।

पूर्णार्घ्य-तर्ज - खिलता है जिंदगी का .....

मिलता है प्रभु भक्ति का अवसर कभी-कभी।
यह पुण्य का कमल तो खिलता कभी-कभी।।
जो ब्रह्मज्ञान उत्तम वह आपमें रहा।
निजज्ञान पूर्ण हेतू पूजूं अभी अभी ।। मिलता .....।।१।।
लक्ष्मी प्रकृष्ट पाकर परमात्मा हुए।
पूजूं तुम्हें जिनेश्वर रूचि से अभी अभी ।। मिलता ....।।२।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रिजगद्हितगुणादिमहाधुर्यगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं .....। शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

सोरठा - तीर्थंकर अवतार, महावीर जगवंद्य हो।
करो भवोदधि पार, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।१।।

अथ चतुर्थकोष्ठके पुष्पांजलि क्षिपेत् (१०० अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं महावीर्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३०१।।
ॐ ह्रीं महादर्शिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३०२।।
ॐ ह्रीं महार्थविद्गुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३०३।।
ॐ ह्रीं महाभर्तृगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३०४।।
ॐ ह्रीं महाकर्तृगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३०५।।

ॐ ह्रीं महाशीलगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३०६।।
ॐ ह्रीं महागुणिनामालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३०७।।
ॐ ह्रीं महाधर्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३०८।।
ॐ ह्रीं महामौनिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३०९।।
ॐ ह्रीं महाभरगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३१०।।
ॐ ह्रीं महाग्रिमगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३११।।
ॐ ह्रीं महास्रष्टृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३१२।।
ॐ ह्रीं महातीर्थगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३१३।।
ॐ ह्रीं महाख्यातगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३१४।।
ॐ ह्रीं महाहितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३१५।।
ॐ ह्रीं महाधन्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३१६।।
ॐ ह्रीं महाधीशगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३१७।।
ॐ ह्रीं महारूपिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३१८।।
ॐ ह्रीं महामुनिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३१९।।
ॐ ह्रीं महाविभुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३२०।।
ॐ ह्रीं महाकीर्तिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३२१।।
ॐ ह्रीं महादातृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३२२।।
ॐ ह्रीं महारतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३२३।।
ॐ ह्रीं महाकृपगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३२४।।
ॐ ह्रीं महाराध्यगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३२५।।
ॐ ह्रीं महाश्रेष्ठगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३२६।।
ॐ ह्रीं महायतिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३२७।।
ॐ ह्रीं महाक्षान्तिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३२८।।
ॐ ह्रीं महालोकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३२९।।
ॐ ह्रीं महानेत्रगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३३०।।
ॐ ह्रीं महार्घकृद्गुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३३१।।
ॐ ह्रीं महाश्रमिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३३२।।
ॐ ह्रीं महायोग्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३३३।।

ॐ ह्रीं महाशमिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३३४।।
ॐ ह्रीं महादमिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३३५।।
ॐ ह्रीं महेशेशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३३६।।
ॐ ह्रीं महेशात्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३३७।।
ॐ ह्रीं महेशार्च्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३३८।।
ॐ ह्रीं महेशराड्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३३९।।
ॐ ह्रीं महानन्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३४०।।
ॐ ह्रीं महातृप्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३४१।।
ॐ ह्रीं महाहरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३४२।।
ॐ ह्रीं महावरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३४३।।
ॐ ह्रीं महर्षीशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३४४।।
ॐ ह्रीं महाभागगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३४५।।
ॐ ह्रीं महास्थानगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३४६।।
ॐ ह्रीं महान्तकगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३४७।।
ॐ ह्रीं महौदर्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३४८।।
ॐ ह्रीं महाकार्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३४९।।
ॐ ह्रीं महाकेवललब्धिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।३५०।।
ॐ ह्रीं महाशिष्टगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३५१।।
ॐ ह्रीं महानिष्टगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३५२।।
ॐ ह्रीं महादक्षगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३५३।।
ॐ ह्रीं महाबलगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३५४।।
ॐ ह्रीं महालक्षगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३५५।।
ॐ ह्रीं महार्थज्ञगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३५६।।
ॐ ह्रीं महाविद्वद्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३५७।।
ॐ ह्रीं महात्मकगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३५८।।
ॐ ह्रीं महेज्यार्हगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३५९।।
ॐ ह्रीं महानाथगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३६०।।
ॐ ह्रीं महानेतृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३६१।।

ॐ ह्रीं महापितृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३६२।।
ॐ ह्रीं महामनोगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३६३।।
ॐ ह्रीं महाचिन्त्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३६४।।
ॐ ह्रीं महासारगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३६५।।
ॐ ह्रीं महायमिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३६६।।
ॐ ह्रीं महेन्द्रार्च्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३६७।।
ॐ ह्रीं महावंद्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३६८।।
ॐ ह्रीं महत्त्वादिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३६९।।
ॐ ह्रीं महानुतगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३७०।।
ॐ ह्रीं परमात्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३७१।।
ॐ ह्रीं परात्मज्ञगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३७२।।
ॐ ह्रीं परंज्योतिर्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३७३।।
ॐ ह्रीं परार्थकृद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३७४।।
ॐ ह्रीं परब्रह्मगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३७५।।
ॐ ह्रीं परब्रह्मरूपगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३७६।।
ॐ ह्रीं परतरगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३७७।।
ॐ ह्रीं परनामगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३७८।।
ॐ ह्रीं परमेशगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३७९।।
ॐ ह्रीं परेज्यार्हगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३८०।।
ॐ ह्रीं परार्थिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३८१।।
ॐ ह्रीं परकार्यधृद्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३८२।।
ॐ ह्रीं परस्वामिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३८३।।
ॐ ह्रीं परज्ञानिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३८४।।
ॐ ह्रीं पराधीशगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३८५।।
ॐ ह्रीं परेहकगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३८६।।
ॐ ह्रीं सत्यवादिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३८७।।
ॐ ह्रीं सत्यात्मगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३८८।।
ॐ ह्रीं सत्यांगगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३८९।।

ॐ ह्रीं सत्यशासनगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३९०।।
ॐ ह्रीं सत्यार्थगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३९१।।
ॐ ह्रीं सत्यवागीशगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३९२।।
ॐ ह्रीं सत्याधारगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३९३।।
ॐ ह्रीं अतिसत्यवाग्गुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३९४।।
ॐ ह्रीं सत्यायगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३९५।।
ॐ ह्रीं सत्यविद्येशगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३९६।।
ॐ ह्रीं सत्यधर्मिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३९७।।
ॐ ह्रीं सत्यवाग्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३९८।।
ॐ ह्रीं सत्याशयगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।३९९।।
ॐ ह्रीं अतिसत्योक्तमतगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.. ।।४००।।

पूर्णार्घ्य-चौबोलछंद-

अष्टद्रव्य से थाल सजाकर, भक्ति भाव से लाये हैं।
चित् चिंतामणि वीर प्रभू की, पूजा करने आये हैं।
।। जय जय जिनवरं ...।।

महासाधु बन बहुविध तप कर, नाना ऋद्धी प्राप्त किया।
भक्तजनों के कष्ट दूर कर, स्वात्मा की उपलब्धि किया।
भव भव के सब कष्ट दूर हों, यही भावना लाएँ हैं।।
।। जय जय ...।।

मोक्षधाम को प्राप्त किया प्रभु, शुद्ध विशुद्ध अनंत गुणी।
सौख्य अतीन्द्रिय ज्ञान अतीन्द्रिय, नित गुण गाते यती मुनी।।
परमपिता परमेश्वर प्रभु को, शीश झुकाने आये हैं।
चित् चिंता .... ।। जय .... ।।

ॐ ह्रीं महावीर्यगुणादिअतिसत्योक्तमतगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं ....। शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

सोरठा - गणपति मुनिपति वंद्य, सुरपति नरपति से नमित।
पूजूं भक्ति अमंद, परमानंद जिनंद को ।।१।।

अथ पंचमकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत् (१०० अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं सत्यहितंकरगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४०१।।
ॐ ह्रीं सत्यतीर्थगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४०२।।
ॐ ह्रीं अतिसत्याढ्ययगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।४०३।।
ॐ ह्रीं सत्याक्तगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४०४।।
ॐ ह्रीं सत्यतीर्थकृद्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।४०५।।
ॐ ह्रीं सत्यसीमाधरगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।४०६।।
ॐ ह्रीं सत्यधर्मतीर्थप्रवर्तकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।४०७।।
ॐ ह्रीं लोकेशगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४०८।।
ॐ ह्रीं लोकनाथार्च्यगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।४०९।।
ॐ ह्रीं लोकालोकविलोकनगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।४१०।।
ॐ ह्रीं लोकविद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४११।।
ॐ ह्रीं लोकमूर्द्धस्थगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४१२।।
ॐ ह्रीं लोकनाथगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४१३।।
ॐ ह्रीं अलोकविद्गुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४१४।।
ॐ ह्रीं लोकदृक्गुणस्वामिने श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४१५।।
ॐ ह्रीं लोककार्यार्थिगुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४१६।।
ॐ ह्रीं लोकज्ञगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४१७।।
ॐ ह्रीं लोकपालकगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४१८।।
ॐ ह्रीं लोकेड्यगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४१९।।
ॐ ह्रीं लोकमांगल्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४२०।।
ॐ ह्रीं लोकोत्तमगुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४२१।।

ॐ ह्रीं लोकराड्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४२२।।
ॐ ह्रीं तीर्थकृद्गुणस्वामिने श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४२३।।
ॐ ह्रीं तीर्थभूतात्मगुणस्वामिने श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४२४।।
ॐ ह्रीं तीर्थेशगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४२५।।
ॐ ह्रीं तीर्थकारकगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४२६।।
ॐ ह्रीं तीर्थभृद्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४२७।।
ॐ ह्रीं तीर्थकर्तृगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४२८।।
ॐ ह्रीं तीर्थप्रणेतृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४२९।।
ॐ ह्रीं सुतीर्थभाग्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४३०।।
ॐ ह्रीं तीर्थाधीशगुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४३१।।
ॐ ह्रीं तीर्थात्मगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४३२।।
ॐ ह्रीं तीर्थज्ञगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४३३।।
ॐ ह्रीं तीर्थनायकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४३४।।
ॐ ह्रीं तीर्थाढ्यगुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४३५।।
ॐ ह्रीं तीर्थसद्राजगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४३६।।
ॐ ह्रीं तीर्थपतिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४३७।।
ॐ ह्रीं तीर्थधृद्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४३८।।
ॐ ह्रीं तीर्थवर्तकगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४३९।।
ॐ ह्रीं तीर्थंकरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४४०।।
ॐ ह्रीं तीर्थेशिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४४१।।
ॐ ह्रीं तीर्थोह्यगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४४२।।
ॐ ह्रीं तीर्थपालकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४४३।।
ॐ ह्रीं तीर्थसृष्टृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४४४।।
ॐ ह्रीं तीर्थद्धिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४४५।।
ॐ ह्रीं तीर्थाग्रगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४४६।।
ॐ ह्रीं तीर्थदेशकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४४७।।
ॐ ह्रीं निःकर्मगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४४८।।

ॐ ह्रीं निर्मलगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४४९।।
ॐ ह्रीं नित्यगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४५०।।
ॐ ह्रीं निराबाधगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४५१।।
ॐ ह्रीं निरामयगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४५२।।
ॐ ह्रीं निस्तमस्कगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४५३।।
ॐ ह्रीं निरौपम्यगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४५४।।
ॐ ह्रीं निःकलंकगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४५५।।
ॐ ह्रीं निरायुधगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४५६।।
ॐ ह्रीं निर्लेपगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४५७।।
ॐ ह्रीं निष्कलगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४५८।।
ॐ ह्रीं अत्यन्तनिर्दोषगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ...।।४५९।।
ॐ ह्रीं निर्जराग्रणीगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।४६०।।
ॐ ह्रीं निःस्वप्नगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४६१।।
ॐ ह्रीं निर्भयगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४६२।।
ॐ ह्रीं अतीवनिःप्रमादगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।४६३।।
ॐ ह्रीं निराश्रयगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४६४।।
ॐ ह्रीं निरंबरगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४६५।।
ॐ ह्रीं निरातंकगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४६६।।
ॐ ह्रीं निर्भूषगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४६७।।
ॐ ह्रीं निर्मलाशयगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४६८।।
ॐ ह्रीं निर्मदगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४६९।।
ॐ ह्रीं निरतीचारगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४७०।।
ॐ ह्रीं निर्मोहगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४७१।।
ॐ ह्रीं निरुपद्रवगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४७२।।
ॐ ह्रीं निर्विकारगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४७३।।
ॐ ह्रीं निराधारगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४७४।।

ॐ ह्रीं निरीहगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४७५।।
ॐ ह्रीं निर्मलांगभाग्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४७६।।
ॐ ह्रीं निर्जरगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४७७।।
ॐ ह्रीं निरजस्कगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४७८।।
ॐ ह्रीं निराशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४७९।।
ॐ ह्रीं निर्विशेषविद्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४८०।।
ॐ ह्रीं निर्मिमेषगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४८१।।
ॐ ह्रीं निराकारगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४८२।।
ॐ ह्रीं निरतगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४८३।।
ॐ ह्रीं निरतिक्रमगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।४८४।।
ॐ ह्रीं निर्वेदगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४८५।।
ॐ ह्रीं निष्कषायात्मगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.. ।।४८६।।
ॐ ह्रीं निर्बंधगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४८७।।
ॐ ह्रीं निस्पृहाग्रगनामविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।४८८।।
ॐ ह्रीं विरजोगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४८९।।
ॐ ह्रीं विमलात्मज्ञगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४९०।।
ॐ ह्रीं विमलगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४९१।।
ॐ ह्रीं विमलान्तरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं... ।।४९२।।
ॐ ह्रीं विरतगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४९३।।
ॐ ह्रीं विरताधीशगुणसहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४९४।।
ॐ ह्रीं विरागगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४९५।।
ॐ ह्रीं वीतमत्सरगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४९६।।
ॐ ह्रीं विभवगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४९७।।
ॐ ह्रीं विभवान्तस्थगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४९८।।
ॐ ह्रीं विचारकृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।४९९।।
ॐ ह्रीं वीतरागगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५००।।

पूर्णार्घ्य - तर्ज - आओ बच्चों तुम्हें ...

हे भगवन् ! अब कृपा कीजिये, शरण लिया मैं आपकी।
भक्ति भाव से अर्घ्य चढ़ाऊं, कृपासिंधु हैं आप ही।।
वंदे वीरजिनं - ४

मिथ्याअविरति कषाय योगों, से ही कर्म बंध होते ।
बहिरात्मा जब अंतर आत्मा, होता कर्म नष्ट होते।।
कर का अवलंबन दे तारो, त्रिभुवन के गुरु आप ही ।
भक्ति ... । वंदे वीरजिनं - ४

चिन्मय परमहंस परमात्मा, इनकी भक्ती सुख देती।
जो जन चरण कमल को पूजें, उनके सब दुख हर लेती।।
इसीलिये मैं भक्ति करूं नित, हरो व्यथा भव व्याधि की।
भक्ति .... । वंदे वीर जिनं - ४

ॐ ह्रीं सत्यहितंकरादि-व्रीतरागगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं .... ।

शांतये शांतिधारा । दिव्यपुष्पांजलिः।

दोहा - गुणसमुद्र के गुणरतन, को गिन पावे पार ।
पुष्पांजलि से पूजते, भरे सौख्य भंडार ।।१।।

अथ षष्ठमकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत् (१०० अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं विश्वासिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५०१।।
ॐ ह्रीं विगताबाधगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५०२।।
ॐ ह्रीं विचारज्ञगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५०३।।
ॐ ह्रीं विशारदगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५०४।।
ॐ ह्रीं विवेकिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५०५।।
ॐ ह्रीं विगतग्रन्थगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५०६।।
ॐ ह्रीं विविक्तगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५०७।।

ॐ ह्रीं अव्यक्तसंस्थितिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५०८।।
ॐ ह्रीं विजयिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५०९।।
ॐ ह्रीं विजयारातिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५१०।।
ॐ ह्रीं विनष्टारिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५११।।
ॐ ह्रीं वियच्छ्रुतगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५१२।।
ॐ ह्रीं त्रिरत्नेशगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५१३।।
ॐ ह्रीं त्रिपीठस्थगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५१४।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकज्ञगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५१५।।
ॐ ह्रीं त्रिकालविद्गुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५१६।।
ॐ ह्रीं त्रिदण्डघ्नगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५१७।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकेशगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५१८।।
ॐ ह्रीं त्रिछत्रांकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५१९।।
ॐ ह्रीं त्रिभूमिपगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५२०।।
ॐ ह्रीं त्रिशल्यारिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५२१।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकार्च्यगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५२२।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकपतिसेवितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५२३।।
ॐ ह्रीं त्रियोगिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५२४।।
ॐ ह्रीं त्रिकसंवेगगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५२५।।
ॐ ह्रीं त्रैलोक्याढ्यगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५२६।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकराड्गुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५२७।।
ॐ ह्रीं अनन्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५२८।।
ॐ ह्रीं अनंतसौख्याक्षिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।५२९।।
ॐ ह्रीं अनंतकेवलेक्षणगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।५३०।।
ॐ ह्रीं अनंतविक्रमगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५३१।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५३२।।
ॐ ह्रीं अनंतगुणाकरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५३३।।
ॐ ह्रीं अनंतविक्रमनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।५३४।।
ॐ ह्रीं अनंतस्ववेत्तृगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५३५।।
ॐ ह्रीं अनंतशक्तिमद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।५३६।।
ॐ ह्रीं अनंतमहिमारूढगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।५३७।।
ॐ ह्रीं अनंतज्ञगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५३८।।
ॐ ह्रीं अनंतशर्मदगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५३९।।
ॐ ह्रीं सिद्धपदप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५४०।।
ॐ ह्रीं बुद्धगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५४१।।
ॐ ह्रीं प्रसिद्धात्मगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५४२।।
ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५४३।।
ॐ ह्रीं अतिबुद्धिमद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५४४।।
ॐ ह्रीं सिद्धिदगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५४५।।
ॐ ह्रीं सिद्धमार्गस्थगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५४६।।
ॐ ह्रीं सिद्धार्थगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५४७।।
ॐ ह्रीं सिद्धसाधनगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५४८।।
ॐ ह्रीं सिद्धसाध्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।५४९।।
ॐ ह्रीं अतिशुद्धात्मगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।५५०।।
ॐ ह्रीं सिद्धिकृद्गुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५५१।।
ॐ ह्रीं सिद्धिशासनगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५५२।।
ॐ ह्रीं सुसिद्धान्तविशुद्धाढ्यगुणप्राप्ताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५५३।।
ॐ ह्रीं सिद्धगामिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५५४।।
ॐ ह्रीं बुधाधिपगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५५५।।
ॐ ह्रीं अच्युतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५५६।।

ॐ ह्रीं अच्युतनाथेशगुणाधिपाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५५७।।
ॐ ह्रीं अचलचित्तगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५५८।।
ॐ ह्रीं अचलस्थितिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५५९।।
ॐ ह्रीं अतिप्रभगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५६०।।
ॐ ह्रीं अतिसौम्यात्मगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५६१।।
ॐ ह्रीं सोमरूपगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५६२।।
ॐ ह्रीं अतिकान्तिमद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।५६३।।
ॐ ह्रीं वरिष्ठगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५६४।।
ॐ ह्रीं स्थविरगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५६५।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५६६।।
ॐ ह्रीं गरिष्ठगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५६७।।
ॐ ह्रीं अनिष्टदूरगगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५६८।।
ॐ ह्रीं द्रष्टृगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५६९।।
ॐ ह्रीं पुष्टगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५७०।।
ॐ ह्रीं विशिष्टात्मगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५७१।।
ॐ ह्रीं स्रष्टृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५७२।।
ॐ ह्रीं धातृगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५७३।।
ॐ ह्रीं प्रजापतिगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५७४।।
ॐ ह्रीं पद्मासनगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५७५।।
ॐ ह्रीं सपद्मांकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५७६।।
ॐ ह्रीं पद्मयानगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५७७।।
ॐ ह्रीं चतुर्मुखगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५७८।।
ॐ ह्रीं श्रीपतिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५७९।।
ॐ ह्रीं श्रीनिवासगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५८०।।
ॐ ह्रीं विजेतृगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५८१।।
ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५८२।।
ॐ ह्रीं धर्मचक्रधरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।५८३।।
ॐ ह्रीं धर्मिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५८४।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थप्रवर्तकगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।५८५।।
ॐ ह्रीं धर्मराजगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५८६।।
ॐ ह्रीं अतिधर्मात्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५८७।।
ॐ ह्रीं धर्माधारगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५८८।।
ॐ ह्रीं सुधर्मदगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५८९।।
ॐ ह्रीं धर्ममूर्तिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५९०।।
ॐ ह्रीं अधर्मघ्नगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५९१।।
ॐ ह्रीं धर्मचक्रिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५९२।।
ॐ ह्रीं सुधर्मधीगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५९३।।
ॐ ह्रीं धर्मकृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५९४।।
ॐ ह्रीं धर्मभृद्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५९५।।
ॐ ह्रीं धर्मशीलगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५९६।।
ॐ ह्रीं धर्माधिनायकगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।५९७।।
ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तिगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५९८।।
ॐ ह्रीं सुमंत्रज्ञगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।५९९।।
ॐ ह्रीं मंत्रमयगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६००।।

पूर्णार्घ्य - तर्ज - आवो बंधू तुम्हें दिखायें .....

आवो हम सव करें वंदना, महावीर भगवान की।
त्रिशलानंदन को जजते ही, मिले राह निर्वाण की।।
वंदे वीरजिनं वंदे वीरजिनं, वंदे वीरजिनं वंदे वीरजिनं।।१।।
निजस्वरूप में तन्मय होकर, तीन गुप्ति से रक्षित हैं।
परमानन्द सुखामृत पीकर, सिद्ध वने गुण मंडित हैं।
अर्घ्य चढ़ाकर करें अर्चना, इन गुणवंत प्रधान की ।।
त्रिशलानंदन को जजते ही, मिले राह निर्वाण की ।।१।। वंदे ...

ॐ ह्रीं विश्वासिगुणादि-मंत्रमयगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं ....। शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा - ध्यानामृत पीकर भये, मृत्युंजयि प्रभु आप।
पुष्पांजलि से पूजहूँ, हरो सकल संताप ।।१।।

अथ सप्तमकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत् (१०० अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं तेजस्विगुणद्योतकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६०१।।
ॐ ह्रीं विक्रमिगुणप्रभावकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६०२।।
ॐ ह्रीं स्वामिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६०३।।
ॐ ह्रीं तपस्विगुणद्योतकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६०४।।
ॐ ह्रीं संयमिगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६०५।।
ॐ ह्रीं यमिगुणप्रभावकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६०६।।
ॐ ह्रीं कृतिगुणपूरकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६०७।।
ॐ ह्रीं व्रतिगुणोद्योतकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६०८।।
ॐ ह्रीं कृतार्थात्मगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६०९।।
ॐ ह्रीं कृतकृत्यगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६१०।।
ॐ ह्रीं कृताविधिगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६११।।
ॐ ह्रीं प्रभुगुणप्रभावकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६१२।।
ॐ ह्रीं विभुगुणविभावियाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६१३।।
ॐ ह्रीं गुरुगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६१४।।
ॐ ह्रीं योगिगुणसंयुक्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६१५।।
ॐ ह्रीं गरीयान्गुणबृंहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६१६।।
ॐ ह्रीं गुरुकार्यकृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६१७।।
ॐ ह्रीं वृषभगुणबृंहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६१८।।
ॐ ह्रीं वृषभाधीशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६१९।।
ॐ ह्रीं वृषचिन्हगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६२०।।
ॐ ह्रीं वृषाश्रयगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६२१।।
ॐ ह्रीं वृषकेतुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६२२।।
ॐ ह्रीं वृषाधारगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६२३।।

ॐ ह्रीं वृषभेन्द्रगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६२४।।
ॐ ह्रीं वृषप्रदगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६२५।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६२६।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठात्मगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६२७।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणबृंहिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६२८।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मपदेश्वरगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६२९।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मज्ञगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३०।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मभूतात्मगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३१।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मपालकगुणपरिपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६३२।।
ॐ ह्रीं अद्भुतगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३३।।
ॐ ह्रीं पूज्यगुणपूजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३४।।
ॐ ह्रीं अर्हन्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३५।।
ॐ ह्रीं भगवन्नामसार्थककराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३६।।
ॐ ह्रीं स्तुत्यगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३७।।
ॐ ह्रीं स्तवनार्हगुणवंदिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३८।।
ॐ ह्रीं स्तुतीश्वरगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३९।।
ॐ ह्रीं वंद्यगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४०।।
ॐ ह्रीं नमस्कृतिगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४१।।
ॐ ह्रीं अत्यन्तप्रणामयोग्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।६४२।।
ॐ ह्रीं ऊर्जितगुणपूजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४३।।
ॐ ह्रीं गुणिगुणनंदिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४४।।
ॐ ह्रीं गुणाकरनामसार्थककराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६४५।।
ॐ ह्रीं अनंतगुणाब्धिनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४६।।
ॐ ह्रीं गुणभूषणनामसार्थककराय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।६४७।।
ॐ ह्रीं गुणादरिनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४८।।
ॐ ह्रीं गुणग्रामनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४९।।
ॐ ह्रीं गुणार्थिनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५०।।
ॐ ह्रीं गुण[illegible]नानविभू[illegible]ाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६[illegible]।।

ॐ ह्रीं गुणरूपनाममंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५२।।
ॐ ह्रीं गुणातीतनामनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५३।।
ॐ ह्रीं गुणदनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५४।।
ॐ ह्रीं गुणवेष्टितनामनंदिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५५।।
ॐ ह्रीं गुणाश्रयनामपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५६।।
ॐ ह्रीं गुणात्माक्तनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।६५७।।
ॐ ह्रीं गुणासक्तनामविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।६५८।।
ॐ ह्रीं अगुणान्तकृद्गुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५९।।
ॐ ह्रीं गुणाधिपनामप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६६०।।
ॐ ह्रीं गुणान्तःस्थनामधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६६१।।
ॐ ह्रीं गुणभृद्नामविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६६२।।
ॐ ह्रीं गुणपोषकनाममंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६६३।।
ॐ ह्रीं गुणाराध्यनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६६४।।
ॐ ह्रीं गुणज्येष्ठपदप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६६५।।
ॐ ह्रीं गुणाधारपदास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६६६।।
ॐ ह्रीं गुणाग्रगनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६६७।।
ॐ ह्रीं पवित्रगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६६८।।
ॐ ह्रीं पूतसर्वांगगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६६९।।
ॐ ह्रीं पूतवाग्गुणपवित्रिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६७०।।
ॐ ह्रीं पूतशासनगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६७१।।
ॐ ह्रीं पूतकर्मगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६७२।।
ॐ ह्रीं अतिपूतात्मगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६७३।।
ॐ ह्रीं शुचिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६७४।।
ॐ ह्रीं शौचात्मकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६७५।।
ॐ ह्रीं अमलगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६७६।।
ॐ ह्रीं कर्मारिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६७७।।
ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६७८।।

ॐ ह्रीं कर्मारातिनिकंदनगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।६७९।।
ॐ ह्रीं कर्मविध्वंसकगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६८०।।
ॐ ह्रीं कर्मोच्छेदिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६८१।।
ॐ ह्रीं कर्मांगनाशकगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६८२।।
ॐ ह्रीं सुसंवृत्तगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६८३।।
ॐ ह्रीं त्रिगुप्तात्मगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६८४।।
ॐ ह्रीं निरास्रवगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६८५।।
ॐ ह्रीं त्रिगुप्तिवद्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६८६।।
ॐ ह्रीं विद्यामयगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६८७।।
ॐ ह्रीं अतिविद्यात्मगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६८८।।
ॐ ह्रीं सर्वविद्येशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६८९।।
ॐ ह्रीं आत्मवद्गुणसमन्वितात्मय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६९०।।
ॐ ह्रीं आत्मस्थितिगुणधारकमुनिगुणविभूषिताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६९१।।
ॐ ह्रीं श्रेण्यारोहणफलप्राप्तयतिगुणसमन्विताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६९२।।
ॐ ह्रीं अनागारगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६९३।।
ॐ ह्रीं पुराणपुरुषगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६९४।।
ॐ ह्रीं अव्ययगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६९५।।
ॐ ह्रीं सर्वप्राणिरक्षक-पितृगुणसमन्विताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६९६।।
ॐ ह्रीं पितामहगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६९७।।
ॐ ह्रीं भर्तृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६९८।।
ॐ ह्रीं मोक्षसुखकर्तृगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।६९९।।
ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियविजयिने दान्तगुणविभूषिताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७००।।

पूर्णार्घ्य - शंभुछंद -

व्यवहार रत्नत्रय पालन कर, निश्चय रत्नत्रय प्राप्त किया।
फिर निर्विकल्प ध्यानी बनकर, निज आत्म सुधारस प्राप्त किया।।
केवलज्ञानी हो श्री विहार, करके भव्यों को पार किया।
त्रैलोक्यशिखर पर जा तिष्ठे, हम पूजत परमानंद लिया।।१।।

ॐ ह्रीं तेजस्विगुणादि दांतगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं .... । शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा - धर्मचक्र के अधिपती, त्रिभुवनपति जिनराज ।
सुमन चढ़ाकर पूजहूँ, नमूं नमूं नत माथ ।।१।।

अथ अष्टमकोष्ठके पुष्पाजंलिं क्षिपेत् (१०० अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं मोक्षसौख्यसाधनसमर्थक्षमगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७०१।।
ॐ ह्रीं सर्वकल्याणकर-शिवनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७०२।।
ॐ ह्रीं ईश्वरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७०३।।
ॐ ह्रीं शंकरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७०४।।
ॐ ह्रीं धीमद्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७०५।।
ॐ ह्रीं मृत्युञ्जयगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७०६।।
ॐ ह्रीं सनातनगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७०७।।
ॐ ह्रीं दक्षगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७०८।।
ॐ ह्रीं ज्ञानिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७०९।।
ॐ ह्रीं शमिगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७१०।।
ॐ ह्रीं ध्यानिगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७११।।
ॐ ह्रीं सुशीलगुणप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७१२।।
ॐ ह्रीं शीलसागरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७१३।।
ॐ ह्रीं सर्वर्द्धिप्राप्त-ऋषिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।७१४।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्यामय-कविगुणविकसिताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७१५।।
ॐ ह्रीं कवीन्द्राद्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७१६।।
ॐ ह्रीं ऋषीन्द्रगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७१७।।
ॐ ह्रीं ऋषिनायकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७१८।।
ॐ ह्रीं वेदांगगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७१९।।
ॐ ह्रीं वेदविद्गुणप्रकाशकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७२०।।
ॐ ह्रीं वेद्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७२१।।
ॐ ह्रीं स्वसंवेद्यगुणविकासाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७२२।।
ॐ ह्रीं अमलस्थितिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७२३।।
ॐ ह्रीं अष्टादशोत्तरसहस्रशीलगुणमंडिताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७२४।।
ॐ ह्रीं दिग्वाससद्गुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७२५।।
ॐ ह्रीं जातरूपगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७२६।।
ॐ ह्रीं विदांवरगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७२७।।
ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७२८।।
ॐ ह्रीं ग्रन्थदूरस्थगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७२९।।
ॐ ह्रीं निःसंगगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७३०।।
ॐ ह्रीं निःपरिग्रहगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७३१।।
ॐ ह्रीं धीरगुणविवर्द्धकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७३२।।
ॐ ह्रीं वीरगुणविवर्द्धकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७३३।।
ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।७३४।।
ॐ ह्रीं धैर्यशालिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७३५।।
ॐ ह्रीं सुलक्षणगुणलक्षिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७३६।।
ॐ ह्रीं शान्तगुणप्रकाशिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७३७।।
ॐ ह्रीं गंभीरगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७३८।।
ॐ ह्रीं आत्मज्ञगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७३९।।
ॐ ह्रीं कलामूर्तिगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७४०।।

ॐ ह्रीं कलाधरगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७४१।।
ॐ ह्रीं युगादिपुरुषगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।७४२।।
ॐ ह्रीं अव्यक्तगुणप्रकटिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७४३।।
ॐ ह्रीं व्यक्तवाग्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७४४।।
ॐ ह्रीं व्यक्तशासनगुणविराजिताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७४५।।
ॐ ह्रीं अनादिनिधनगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।७४६।।
ॐ ह्रीं दिव्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७४७।।
ॐ ह्रीं दिव्यांगगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७४८।।
ॐ ह्रीं दिव्यधीधनगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७४९।।
ॐ ह्रीं तपोधनगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७५०।।
ॐ ह्रीं वियद्गामिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७५१।।
ॐ ह्रीं जागरूकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७५२।।
ॐ ह्रीं अतीन्द्रियगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७५३।।
ॐ ह्रीं अनन्तर्द्धिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७५४।।
ॐ ह्रीं अचिन्त्यर्द्धिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७५५।।
ॐ ह्रीं अमेयर्द्धिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७५६।।
ॐ ह्रीं परार्घ्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७५७।।
ॐ ह्रीं मौनिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७५८।।
ॐ ह्रीं धुर्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७५९।।
ॐ ह्रीं भटगुणप्रकटिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७६०।।
ॐ ह्रीं शूरगुणविवर्द्धकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७६१।।
ॐ ह्रीं सार्थवाहगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७६२।।
ॐ ह्रीं शिवाध्वगगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७६३।।
ॐ ह्रीं मोक्षसाधनोपायप्रदर्शक-साधुगुणनिधानाय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७६४।।
ॐ ह्रीं द्वादशगणवेष्टित-गणिगुणविभूषिताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७६५।।

ॐ ह्रीं सुताधारगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७६६।।
ॐ ह्रीं पाठकगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७६७।।
ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृग्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं ... ।।७६८।।
ॐ ह्रीं आदीशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७६९।।
ॐ ह्रीं आदिभूभर्तृगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७७०।।
ॐ ह्रीं आदिमगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७७१।।
ॐ ह्रीं आदिजिनेश्वरगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।७७२।।
ॐ ह्रीं आदितीर्थंकरगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।७७३।।
ॐ ह्रीं आदिसृष्टिकृद्गुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।७७४।।
ॐ ह्रीं आदिदेशकगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।७७५।।
ॐ ह्रीं आदिब्रह्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७७६।।
ॐ ह्रीं आदिनाथगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७७७।।
ॐ ह्रीं अर्च्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७७८।।
ॐ ह्रीं आदिषट्कर्मदेशकगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।७७९।।
ॐ ह्रीं आदिधर्मविधातृगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।७८०।।
ॐ ह्रीं आदिधर्मराजगुणप्रकटिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।७८१।।
ॐ ह्रीं अग्रजगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७८२।।
ॐ ह्रीं अग्रिमगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७८३।।
ॐ ह्रीं श्रेयान्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७८४।।
ॐ ह्रीं श्रेयस्करगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७८५।।

ॐ ह्रीं श्रेयोगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७८६।।
ॐ ह्रीं श्रेयोऽग्रणीगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७८७।।
ॐ ह्रीं सुखावहगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७८८।।
ॐ ह्रीं श्रेयोदगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७८९।।
ॐ ह्रीं श्रेयवाराशिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७९०।।
ॐ ह्रीं श्रेयवान्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७९१।।
ॐ ह्रीं श्रेयसंभवगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७९२।।
ॐ ह्रीं अजितगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७९३।।
ॐ ह्रीं जितसंसारगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७९४।।
ॐ ह्रीं सन्मतिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७९५।।
ॐ ह्रीं सन्मतिप्रियगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७९६।।
ॐ ह्रीं संस्कृतगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७९७।।
ॐ ह्रीं प्राकृतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७९८।।
ॐ ह्रीं प्राज्ञगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।७९९।।
ॐ ह्रीं ज्ञानमूर्तिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८००।।

पूर्णार्घ्य - तर्ज - तुमसे लागी लगन .....

नाथ ! त्रिभुवनपती, पाई पंचमगती, इंद्र आये।
भक्ति से आपको शिर झुकायें।।
मोह शत्रू को तुमने विनाशा, सर्वगुण को स्वयं में प्रकाशा।
मारा यमराज को, पाया शिवराज को, भव मिटाये।
इन्द्र सब मिलके उत्सव मनायें ।। नाथ....।।१।।

आप अतिशय गुणों से भरे हैं, स्वयं मुक्तिरमा को वरे हैं।
आप वंदन करें, पापखंडन करें, सौख्य पावें।।
दुःख संकट तुरत ही भगायें । नाथ .... ।।२।।

नाम मंत्रों को रुचि से जपूं मैं, आपके पाद पंकज जजूं है।
गणधरादी नमें, आप गुण में रमें, कीर्ति गायें।।
कर्मबंधन कटें मुक्ति पायें ।। नाथ ....।।३।।

ॐ ह्रीं क्षमगुणादि-ज्ञानमूर्तिगुणपर्यंतशतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं ....। शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा - कर्ममर्महर तीर्थंकर, प्रीतिंकर सुखकार।
पुष्पाजंलि से पूजहूँ, पाऊँ सौख्य अपार ।।१।।

अथ नवमकोष्ठके पुष्पाजंलिं क्षिपेत् (१०० अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं च्युतोपमगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८०१।।
ॐ ह्रीं नाभेयगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८०२।।
ॐ ह्रीं आदियोगीन्द्रगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८०३।।
ॐ ह्रीं उत्तमगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८०४।।
ॐ ह्रीं सुव्रतगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८०५।।
ॐ ह्रीं मनुगुणप्रधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८०६।।
ॐ ह्रीं शत्रुञ्जयगुणप्रधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८०७।।
ॐ ह्रीं सुमेधाविगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८०८।।
ॐ ह्रीं नाथगुणसनाथाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८०९।।
ॐ ह्रीं आद्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८१०।।
ॐ ह्रीं अखिलार्थविद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८११।।
ॐ ह्रीं क्षेमिगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८१२।।
ॐ ह्रीं कुलकरगुणसनाथाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८१३।।
ॐ ह्रीं कामगुणसुकान्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८१४।।
ॐ ह्रीं देवदेवगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८१५।।
ॐ ह्रीं निरुत्सुकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८१६।।
ॐ ह्रीं क्षेमगुणविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८१७।।
ॐ ह्रीं क्षेमंकरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८१८।।
ॐ ह्रीं अग्राह्यगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८१९।।
ॐ ह्रीं ज्ञानगम्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८२०।।
ॐ ह्रीं निरुत्तरगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८२१।।
ॐ ह्रीं स्थेयानूगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८२२।।
ॐ ह्रीं तृप्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८२३।।
ॐ ह्रीं सदाचारिगुणविधात्रे श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८२४।।

ॐ ह्रीं सुघोषगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८२५।।
ॐ ह्रीं सन्मुखगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८२६।।
ॐ ह्रीं सुखीगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८२७।।
ॐ ह्रीं वाग्मिगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८२८।।
ॐ ह्रीं वागीश्वरगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८२९।।
ॐ ह्रीं वाचस्पतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८३०।।
ॐ ह्रीं सद्बुद्धिगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८३१।।
ॐ ह्रीं उन्नतगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८३२।।
ॐ ह्रीं उदारगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८३३।।
ॐ ह्रीं मोक्षगामिगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८३४।।
ॐ ह्रीं मुक्तगुणपरिपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८३५।।
ॐ ह्रीं मुक्तिप्ररूपकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८३६।।
ॐ ह्रीं भव्यसार्थाधिपगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८३७।।
ॐ ह्रीं देवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८३८।।
ॐ ह्रीं मनीषीगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८३९।।
ॐ ह्रीं सुहितगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८४०।।
ॐ ह्रीं सुहृद्गुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८४१।।
ॐ ह्रीं मुक्तिभर्तृगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८४२।।
ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।८४३।।
ॐ ह्रीं दिव्यदेहगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८४४।।
ॐ ह्रीं प्रभास्वरगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८४५।।
ॐ ह्रीं मनःप्रियगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८४६।।
ॐ ह्रीं मनोहारिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८४७।।
ॐ ह्रीं मनोज्ञांगगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८४८।।
ॐ ह्रीं मनोहरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८४९।।
ॐ ह्रीं स्वस्थगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८५०।।
ॐ ह्रीं भूतपतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८५१।।
ॐ ह्रीं पूर्वगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८५२।।

ॐ ह्रीं पुराणपुरुषगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८५३।।
ॐ ह्रीं अक्षयगुणपूर्णाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८५४।।
ॐ ह्रीं शरण्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८५५।।
ॐ ह्रीं पंचकल्याणपूजार्हगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।८५६।।
ॐ ह्रीं अबंधुबांधवगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।८५७।।
ॐ ह्रीं कल्याणात्मगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।८५८।।
ॐ ह्रीं सुकल्याणगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८५९।।
ॐ ह्रीं कल्याणगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८६०।।
ॐ ह्रीं प्रकृतिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८६१।।
ॐ ह्रीं प्रियगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८६२।।
ॐ ह्रीं सुभगगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८६३।।
ॐ ह्रीं कांतिमद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८६४।।
ॐ ह्रीं दीप्रगुणदीपिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८६५।।
ॐ ह्रीं गूढात्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८६६।।
ॐ ह्रीं गूढगोचरगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८६७।।
ॐ ह्रीं जगच्चूड़ामणिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।८६८।।
ॐ ह्रीं तुंगगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८६९।।
ॐ ह्रीं दिव्यभामंडलगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।८७०।।
ॐ ह्रीं सुधीगुणप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८७१।।
ॐ ह्रीं महौजसगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८७२।।
ॐ ह्रीं अतिस्फुरत्कांतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।८७३।।
ॐ ह्रीं सूर्यकोट्यधिकप्रभगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।८७४।।
ॐ ह्रीं निष्टप्तकनकच्छायगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय
अर्घ्यं .... ।।८७५।।
ॐ ह्रीं हेमवर्णगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८७६।।

ॐ ह्रीं स्फुरद्द्युतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८७७।।

ॐ ह्रीं प्रतापिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८७८।।

ॐ ह्रीं प्रबलगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८७९।।

ॐ ह्रीं पूर्णगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८८०।।

ॐ ह्रीं तेजोराशिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८८१।।

ॐ ह्रीं गतोपमगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८८२।।

ॐ ह्रीं शांतेशगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८८३।।

ॐ ह्रीं शांतकर्मारिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८८४।।

ॐ ह्रीं शांतिकृद्गुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८८५।।

ॐ ह्रीं शांतिकारकगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८८६।।

ॐ ह्रीं भुक्तिदगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८८७।।

ॐ ह्रीं मुक्तिदगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८८८।।

ॐ ह्रीं दातृगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८८९।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाब्धिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८९०।।

ॐ ह्रीं शीलसागरगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८९१।।

ॐ ह्रीं स्पष्टवाग्गुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८९२।।

ॐ ह्रीं पुष्टिदगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८९३।।

ॐ ह्रीं पुष्टगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८९४।।

ॐ ह्रीं शिष्टेष्टगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८९५।।

ॐ ह्रीं शिष्टेसेवितगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८९६।।

ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षरगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८९७।।

ॐ ह्रीं विशिष्टांगगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८९८।।

ॐ ह्रीं स्पष्टवृत्तगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।८९९।।

ॐ ह्रीं विशुद्धिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९००।।

पूर्णार्घ्य - तर्ज - आवो बच्चों तुम्हें दिखायें ....

स्वर्णथाल में अर्घ्य सजाकर, भक्तिभाव से लाये हैं।
कल्पतरू सम वीरप्रभू की, पूजा करने आये हैं।।
वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं।
त्रिभुवन अग्रशिखर पर राजित, अंतिम तनु से किंचित् कम।
पुरुषाकार कहाये फिर भी, निराकार आकृति उत्तम।।
इंद्रिय विषयों से विरहित प्रभु, सौख्य अतीन्द्रिय प्राप्त किया।
परमानंदामृत अनुभवरत, पूर्ण अतीन्द्रिय ज्ञान लिया।।
वर्ण गंध रस रहित अमूर्तिक, आप शरण में आये हैं।
कल्पतरू सम ..... वंदे .... ।।१।।
त्रिभुवन में बहु घूम चुका प्रभु, नहिं किंचित् सुख प्राप्त किया।
निश्चयनय से आप सदृश मैं, यह निश्चय कर शरण लिया।।
आप भक्ति से शक्ति प्रगट हो, मुक्ति मार्ग में अचल रहूँ।
केवल ज्ञानमती प्रगटित हो, शिव प्राप्ती तक यही चहूँ।।
नाथ! आपकी कृपा दृष्टि की, आश लगाकर आये हैं।
कल्पतरू सम वीर प्रभू की, पूजा करने आये हैं ।।२।।
वंदे जिनवरं - ४

ॐ ह्रीं च्युतोपमगुणादिविशुद्धिगुणपर्यंत शतमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं .....। शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा - घात घातिया कर्म को, किया ज्ञान को पूर्ण।
पुष्पांजलि से पूजहूँ, करो हमें सुखपूर्ण ।।१।।

अथ दशमकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत् (१०८ अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं निष्किंचनगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९०१।।
ॐ ह्रीं निरालंबगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९०२।।
ॐ ह्रीं निपुणगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९०३।।
ॐ ह्रीं निपुणाश्रितगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९०४।।

ॐ ह्रीं निर्ममगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९०५।।
ॐ ह्रीं निरहंकारगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९०६।।
ॐ ह्रीं प्रशस्तगुणपूरिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९०७।।
ॐ ह्रीं जैनवत्सलगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९०८।।
ॐ ह्रीं तेजोमयगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९०९।।
ॐ ह्रीं अमितज्योतिर्गुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९१०।।
ॐ ह्रीं शुभ्रमूर्तिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९११।।
ॐ ह्रीं तमोपहगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९१२।।
ॐ ह्रीं पुण्यदगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९१३।।
ॐ ह्रीं पुण्यहेत्वात्मगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९१४।।
ॐ ह्रीं पुण्यवद्गुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९१५।।
ॐ ह्रीं पुण्यकर्मकृद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९१६।।
ॐ ह्रीं पूण्यमूर्तिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९१७।।
ॐ ह्रीं महापुण्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९१८।।
ॐ ह्रीं पुण्यवाग्गुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९१९।।
ॐ ह्रीं पुण्यशासनगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९२०।।
ॐ ह्रीं पुण्यभोक्तृगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९२१।।
ॐ ह्रीं अतिपुण्यात्मगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९२२।।
ॐ ह्रीं पुण्यशालिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९२३।।
ॐ ह्रीं शुभाशयगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९२४।।
ॐ ह्रीं अनिद्रालुगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९२५।।
ॐ ह्रीं अतंद्रालुगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९२६।।
ॐ ह्रीं मुमुक्षुगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९२७।।
ॐ ह्रीं मुक्तिबल्लभगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९२८।।
ॐ ह्रीं मुक्तिप्रियगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९२९।।
ॐ ह्रीं प्रजाबंधुगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९३०।।
ॐ ह्रीं प्रजाकरगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।९३१।।

ॐ ह्रीं प्रजाहितगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३२।।
ॐ ह्रीं श्रीशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३३।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६३४।।
ॐ ह्रीं श्रीविरागगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३५।।
ॐ ह्रीं विरक्तधीगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३६।।
ॐ ह्रीं ज्ञानवद्गुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३७।।
ॐ ह्रीं बंधमोक्षज्ञगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३८।।
ॐ ह्रीं बंधघ्नगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६३९।।
ॐ ह्रीं बंधदूरगगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४०।।
ॐ ह्रीं वनवासिगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४१।।
ॐ ह्रीं जटाधारिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४२।।
ॐ ह्रीं क्लेशातीतगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४३।।
ॐ ह्रीं अतिसौख्यवद्गुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४४।।
ॐ ह्रीं आप्तगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४५।।
ॐ ह्रीं अमूर्तगुणालंकृताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४६।।
ॐ ह्रीं कनत्कायगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४७।।
ॐ ह्रीं शक्तगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४८।।
ॐ ह्रीं शक्तिप्रदगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६४९।।
ॐ ह्रीं बुधगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५०।।
ॐ ह्रीं हताक्षगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५१।।
ॐ ह्रीं हतकर्मारिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५२।।
ॐ ह्रीं हतमोहगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .... ।।६५३।।
ॐ ह्रीं हिताश्रितगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६५५।।
ॐ ह्रीं हतमिथ्यात्वगुणप्रदायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६५५।।
ॐ ह्रीं आत्मस्थगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६५६।।
ॐ ह्रीं सुरूपगुणविधायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६५७।।
ॐ ह्रीं हतदुर्नयगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।६५८।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादिगुणनायकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९५९।।
ॐ ह्रीं नयप्रोक्तृगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९६०।।
ॐ ह्रीं हितवादिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९६१।।
ॐ ह्रीं हितध्वनिगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९६२।।
ॐ ह्रीं भव्यचूड़ामणिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९६३।।
ॐ ह्रीं भव्यगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९६४।।
ॐ ह्रीं असमगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।९६५।।
ॐ ह्रीं असमगुणाश्रयनामविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।९६६।।
ॐ ह्रीं निर्विघ्नगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९६७।।
ॐ ह्रीं निश्चलगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९६८।।
ॐ ह्रीं लोकवत्सलगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९६९।।
ॐ ह्रीं लोकलोचनगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९७०।।
ॐ ह्रीं आदेयादिमगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९७१।।
ॐ ह्रीं आदेयगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९७२।।
ॐ ह्रीं हेयादेयप्ररूपकगुणविकसिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।९७३।।
ॐ ह्रीं भद्रगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९७४।।
ॐ ह्रीं भद्राशयगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९७५।।
ॐ ह्रीं भद्रशासनगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९७६।।
ॐ ह्रीं भद्रवाग्गुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९७७।।
ॐ ह्रीं भद्रकृतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९७८।।
ॐ ह्रीं भद्रकृद्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९७९।।
ॐ ह्रीं भद्रभव्याढ्यगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९८०।।
ॐ ह्रीं भद्रबंधुगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९८१।।
ॐ ह्रीं अनामयगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९८२।।
ॐ ह्रीं केवलिगुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९८३।।
ॐ ह्रीं केवलगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९८४।।
ॐ ह्रीं केवलालोकगुणविराजिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं .. ।।९८५।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानलोचनधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९८६।।

ॐ ह्रीं केवलेशगुणास्पदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९८७।।
ॐ ह्रीं महर्द्धीशगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९८८।।
ॐ ह्रीं अच्छेद्यगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९८९।।
ॐ ह्रीं अभेद्यगुणसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९९०।।
ॐ ह्रीं अतिसूक्ष्मवद्गुणनिधानाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९९१।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९९२।।
ॐ ह्रीं कृपामूर्तिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९९३।।
ॐ ह्रीं कृपालुगुणविभूषिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९९४।।
ॐ ह्रीं कृपावहगुणमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९९५।।
ॐ ह्रीं कृपाम्बुधिगुणधारकाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९९६।।
ॐ ह्रीं कृपावाक्यगुणाम्बुदाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९९७।।
ॐ ह्रीं कृपोपदेशतत्परगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९९८।।
ॐ ह्रीं दयानिधिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।९९९।।
ॐ ह्रीं दयादर्शिगुणान्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।१०००।।
ॐ ह्रीं गणधरदेवादिस्वामिने महायोगीश्वरगुणविशिष्टाय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।१००१।।
ॐ ह्रीं सर्वकर्मनिर्मुक्तसाक्षात्सिद्धपदप्राप्ताय द्रव्यसिद्धगुणसमन्विताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।१००२।।
ॐ ह्रीं परमौदारिकतैजसकार्मणत्रयदेहविरहिताय अदेहगुणविभूषिताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।१००३।।
ॐ ह्रीं संसारमध्यपुनरागमनविरहिताय अपुनर्भवगुणविशिष्टाय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।१००४।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानमयीचेतनागुणविशिष्टाय ज्ञानैकचिद्गुणसमन्विताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।१००५।।
ॐ ह्रीं अन्यसंश्लेषरहितस्वात्मनिष्पन्नजीवमयाय जीवघनगुणसमन्विताय
श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।१००६।।

ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धिरूपपदप्राप्ताय सिद्धनामसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।१००७।।

ॐ ह्रीं तनुवातवलयस्थितसिद्धशिलोपरिगमनस्वभावाय लोकाग्रगामुक-गुणविशिष्टाय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं ... ।।१००८।।

पूर्णार्घ्य - शंभुछंद -

महावीर प्रभू के मुख से खिरी, अनअक्षर दिव्यध्वनी भाषा ।
बारहगण भव्यों को हितकर, परिणामी सर्वजगत् भाषा।।
गौतम गुरु ने जिनध्वनि सुनकर, बारह अंगों में रचना की।
उन महावीर के चरणों में, पूर्णार्घ्य समर्पण करूं अभी।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतगुणमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं... ।।१।।

शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेंद्राय विश्वशांतिकराय सर्वसौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः ।

(सुगंधित पुष्प, पीले चावल या लवंग से १०८ मंत्रों का जाप्य करें तथा पूजा के अनन्तर इन मंत्रित लवंगों को श्रद्धालुओं में वितरित कर दें)

जयमाला

दोहा - पुण्यराशि और पुण्यफल, तीर्थंकर भगवान ।
तुम गुणमाला गाय के, बन जाऊँ गुणवान ।।१।।

शेरछंद - जय जय श्री महावीर वीर सन्मती प्रभो! ।
जय वर्द्धमान अन्तिम तीर्थेश जिन विभो ।।
जय जय अनंत सौख्य के भंडार आप हो।
जय जय अनंत गुणमणी सर्वस्व आप हो ।।२।।
तनु भी पवित्र आपका सुद्रव्य कहाया।
शुभ ही सभी परमाणुओं से प्रकृति बनाया।
तुम देह के आकार वर्ण गंध आदि की।
पूजा करें वे धन्य मनुज जन्म धरें भी ।।३।।
प्रभु देहरहित आप निराकार कहाए।
वर्णादि रहित नाथ ज्ञानदेह धराए।।
परिपूर्ण शुद्धबुद्ध सिद्ध परम आतमा।
मैं आप भक्ति से ही बनूं शुद्ध आतमा ।।४।।
जो भव्य शक्ति से तुम्हें निजशीश नावते।
वे शिरोरोग नाश स्मृति शक्ति पावते।।
जो एकटक हो नेत्र से प्रभु आप को निरखें।
उन मोतिबिंदु आदि नेत्र व्याधियां नशे।।५।।
जो कान से अतिप्रीत से तुम वाणि को सुनें।
उन के समस्त कर्ण रोग भागते क्षण में।।
जो मुख से आपकी सदैव संस्तुति करें।
मुख दंत जिह्व तालु रोग शीघ्र परिहरें।।६।।
जो कंठ में प्रभु आपकी गुणमाल पहनते।
उनके समस्त कंठ ग्रीवा रोग विनशते।।
श्वासोच्छ्वास से जो आप मंत्र को जपते।
स० श्वास नासिकादि रोग उनके विनशते।।७।।

जो निज हृदय कमल में आप ध्यान करे हैं।
वे सर्व हृदय रोग आदि क्षण में हरे हैं।।
जो नाभिकमल में तुम्हें नित ध्यावते मुदा।
नश जातीं उनकी सर्व उदर व्याधियां व्यथा ।।८।।
जो पग से जिन भवन में आके नृत्य करें हैं।
वे घुटने पाद रोग सर्व नष्ट करे हैं।।
पंचांग से प्रणाम करें आपको सदा।
उनके समस्त देह रोग क्षण में हों विदा ।।९।।
जो आप भक्ति नदी में अवगाहना करें।
ज्वर रोग, कुष्ठ रक्तचाप रोग परिहरें।।
जो मन में आप के गुणों का स्मरण करें।
वे मानसिक व्यथा समस्त ही हरण करें।।१०।।
हे नाथ! आप ही अपूर्व वैद्य जगत में ।
तन रोग क्या भव रोग भी प्रभु नाशते क्षण में।।
ये तो कुछेक फल प्रभो! तुम भक्ति किये से।
फल तो अचिन्त्य है न कोई कह सके उसे ।।११।।
तुम भक्ति अकेली समस्त कर्म हर सके।
तुम भक्ति अकेली अनंतगुण भी भर सके।।
तुम भक्ति भक्त को स्वयं भगवान बनाती ।
फिर कौन सी वो वस्तु जिसे ये न दिलाती ।।१२।।
अतएव नाथ! आप चरण की शरण लिया।
संपूर्ण व्यथा मेट दीजिये अरज किया ।
अन्यत्र नहीं जाऊं मैं ये ही परण किया।
बस 'ज्ञानमती' पूरिये धरना यहीं दिया ।।१३।।

दोहा - प्रभो! आप गुणरत्न को, गिनत न पावें पार ।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूं अनंतों बार ।।१४।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्रगुणमंत्रसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

... शांतये शांतिधारा । दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद - जो वीरगुणसंपद् विधान सुभक्ति श्रद्धा से करें।
अतिशायि निजगुणसंपदा को प्राप्त कर सुख विस्तरें।।
वे दुःख संकट आधि व्याधी आपदा को परिहरें।
निज ज्ञानमति कैवल्य कर फिर मोक्षलक्ष्मी वश करें ।।१।।
इत्याशीर्वादः।

प्रशस्ति

दोहा - वीर अब्द पच्चीस सौ, अट्ठाइस अमलान।
मगसिर शुक्ला पूर्णिमा, रचा विधान महान ।।१।।
श्रीवीर गुण संपदा, एक हजार सु आठ।
ज्ञानमती गणिनी रचित, मंत्र समन्वित पाठ ।।२।।
छब्बीस सौवां वीर का, जन्मकल्याणक वर्ष ।
इस विधान को पूर्ण कर, मन में है अति हर्ष ।।३।।
जब तक जग में मेरु है, जब तक सूर्य प्रकाश ।
तब तक वीर विधान यह, पूरे भविजन आश ।।४।।
करें करावें जो भविक, त्रिकरण शुद्धि विधान ।
वीर सदृश वे भी बनें, अतुल गुणों की खान ।।५।।

वर्द्धतां वीरशासनम्

卐 卐 卐

आरती

- रचयित्री : प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज - तन डोले .....

जय वीर प्रभो, महावीर प्रभो की, मंगल दीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।टेक.।।

सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभू जी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महीने तक कुबेर ने, बहुत रतन बरसाए ।। प्रभूजी...
कुण्डलपुर की जनता हरषी, तेरे गर्भागम कल्याण पे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।१।।

धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहाँ प्रभू लीना ।
चैत्र सुदी तेरस के दिन, वहाँ इन्द्र महोत्सव कीना ।। प्रभू जी...
काश्यप कुल के, भूषण तुम थे, बस एकमात्र अवतार थे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।२।।

यौवन में दीक्षा धारण कर, राज-पाट सब त्यागा ।
मगशिर असित मनोहर दशमी, मोह अंधेरा भागा ।। प्रभू जी ...
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिये मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।३।।

शुक्ल दशमि वैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था ।। प्रभू जी...
तब दिव्यध्वनि, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।४।।

पावापुरी सरवर में आकर, योग निरोध किया था।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था ।। प्रभू जी...
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।५।।

वर्द्धमान, सन्मति, अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो।
कहे 'चन्दनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योति भर दो ।। प्रभू जी ....
अतिशयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।६।।

भजन

- रचयित्री : प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज - फिरकी वाली .....

वीरा, वीरा, श्री महावीरा, मेरे अतिवीरा, सन्मति शुभ नाम है,
सारे जग का सितारा वर्द्धमान है ।टेक.।।

हिंसा की तांडव लीला जब, सारे जग में छाई थी।
कुण्डलपुर नगरी में त्रिशला, के घर बजी बधाई थी।।
सिद्धारथ का, मनसिज हरषा, हुई रतन की वर्षा।
वीरा वीरा, श्री महावीरा, मेरे अतिवीरा, सन्मति तेरा नाम है,
सारे जग का सितारा वर्द्धमान है ।।१।।

चैत्र सुदी तेरस के दिन जब, जन्मकल्याणक आया था।
स्वर्गों से इन्द्रों ने आकर, उत्सव खूब मनाया था।।
ऐरावत पर, तुमको लाकर, चला इन्द्र सह परिकर ।
वीरा तुमको, सुमेरू पर्वत, की पांडुशिला पर, किया विराजमान है,
जन्म अभिषव पर पुकारा तेरा नाम है ।।२।।

यौवन में ही दीक्षा लेकर, बालयती कहलाए थे।
केवलज्ञान प्राप्त कर प्रभुजी, समवसरण में आए थे।।
दिव्यध्वनि से, सारे जग के, जीव हुए प्रतिबोधित।
वीरा तेरी, सुहानी वाणी, को सुनकर ज्ञानी, बने भगवान हैं,
सारे जग का सितारा वर्द्धमान है ।।३।।

कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, सिद्ध अवस्था पाई थी।
पावापुरी नगरी में सबने, दीपावली मनाई थी।।
युग के अन्तिम, तीर्थंकर तुम, करे 'चन्दना' वन्दन ।
वीरा तेरी, अमर है कहानी, सभी ने जानी, न तुझ सी कोई शान है,
सारे जग का सितारा वर्द्धमान है ।।४।।

卐 卐 卐

पूज्य गणिनीप्रमुख
श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

रचयित्री - आर्यिका चन्दनामती

स्थापना

पूजन करो जी,
श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से शुभ ज्ञान हृदय वश जाता है।।
उनके श्री चरणों में आह्वनन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।

पुष्पांजलि अर्पित.....

पूजन करो जी,
श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी ।।१।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं ।

अष्टक

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने मां जब से, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनियां की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।१।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चंदन और सुगन्धित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।
उसी ज्ञान की सौरभ लेने को, आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है ।।२।।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं...

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया ।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है ।।३।।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं ....

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमलकाया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है ।।४।।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमात्रे कामबाणविनाशनाय पुष्पं ...

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है ।।५।।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं ...

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अन्धेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है ।।६।।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ...

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है ।।७।।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं ...

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने मां जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजन फल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है ।।८।।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं ....
पिच्छी कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्टद्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है ।।९।।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं ....

शेर छंद

हे मां तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।
उस धार की कुछ बूंदों से जलधार मैं करूं ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूं ।।

शांतये शांतिधारा .....

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता ।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता ।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजली करूं।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूं ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् .....

जयमाला

दोहा - ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय ।।
धुन - नागिन - मेरा मन डोले .....
हे बालसती, मां ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।
शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
उन्निस सौ चौंतिस सन् माता, मोहिनी जी हर्षाईं ।। माता....
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।१।।

बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बन्धन सारे, छोड़ी ममता माया ।। माता...
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।२।।
शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीर सिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने, ज्ञान की ज्योति जलाई ।। माता ...
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।३।।
माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है ।। माता ...
ज्ञानज्योति चली, जगभ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।४।।
तीर्थ अयोध्या, मांगीतुंगी, का उद्धार कराया।
फिर प्रयाग में ऋषभदेव का, नूतन तीर्थ बनाया ।। माता ....
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, प्रभु ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।५।।
यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता ।। माता ...
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।६।।
गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते।
कहे 'चन्दनामती' ज्ञान की, सरिता मुझमें भर दे ।। माता ....
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूं शत बार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।७।।

दोहा

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमति मात ।।८।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं .....

ब्राह्मी माता के सदृश, ज्ञानमती जी मात।
सदी बीसवीं की प्रथम, क्वांरी कन्या आप ।।

इत्याशीर्वाद :।

❊ ❊ ❊